एक बार की बात है...

अकबर ने बीरबल से पूछा, "लोग कहते हैं कि बुढ़ापा फिर से आ गया बचपन है। तुम्हें क्या लगता है?"

बीरबल बोला, "जहाँपनाह, यह सही है। अकबर ने कहा-कैसे?"

बीरबल बोला, "जहाँपनाह, जब मैं बच्चा था तब मेरे दाँत नहीं थे, बूढ़ा हो जाऊँगा तब भी मेरे दाँत नहीं रहेंगे। बचपन में खिलौनागाड़ी के सहारे चलता था, बूढ़ा हो जाऊँगा तब भी लकड़ी के सहारे ही चल पाऊँगा। बचपन में अकेला घूमने नहीं जा सकता था, बुढ़ापे में भी नहीं जा पाऊँगा। बचपन में खाना चबाकर नहीं खा पाता था, बूढ़ा हो जाऊँगा तब भी खाना चबाकर नहीं खा पाऊँगा। यानी बचपन और बुढ़ापा एक ही चीज़ है।"

बादशाह अकबर ने कहा, "बीरबल, तो फिर जवानी और बुढ़ापे में क्या फर्क है?"

बीरबल बोला, "जहाँपनाह, कोई फर्क नहीं है। आज मैं कुतुबमीनार से छलाँग नहीं लगा सकता, बूढ़ा होने पर भी छलाँग नहीं लगा पाऊँगा। आज मैं एक टन का पत्थर नहीं उठा सकता, जब बूढ़ा हो जाऊँगा तब भी इतना वज़नी पत्थर नहीं उठा पाऊँगा। आज मैं सूर्य को पूर्व में उगता देखता हूँ, जब बूढ़ा हो जाऊँगा तब भी तो सूर्य को पूर्व से निकलता हुआ ही देखूँगा। आज मैं कौन बाघ-शेर के सामने जा सकता हूँ, जब बूढ़ा हो जाऊँगा तो भी तो नहीं जा पाऊँगा।"

इसलिए मुझे तो बुढ़ापे और जवानी में ज़्यादा फर्क नहीं दिखाई देता।

दो कहानियाँ

ईश्वर की कहानी

एक बार एक पागल से ईश्वर का सामना हुआ। उसने सफाई दी, "मैं पागल नहीं हूँ। मैं कहता हूँ कि मैं ईश्वर हूँ तो सब मुझे पागल समझते हैं जबकि मैं ईश्वर हूँ।"

ईश्वर ने कहा, "लेकिन ईश्वर तो मैं हूँ तुम नहीं।"

पागल ने जवाब दिया, "चुप, चुप। किसी ने सुन लिया तो तुझे भी पागल समझेगा।"

ईश्वर ने आस-पास देखा, खुशकिस्मती से किसी ने सुना नहीं था। वे चुपचाप आगे बढ़ गए।

विष्णु नागर